(5) लोक नाट्य

- मनोरंजन हेतु प्रस्तुत वह कला जिसमें मौखिक अभिनय होता है।

[1] गंधर्व लोकनाट्य ⇒ मारवाड - जोधपुर

- जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की जीवनी खेल के माध्यम से प्रस्तुत करना।

(2) चारबैत नाट्य ⇒ टोंक

- पठानी काव्य (कवाली) पर आधारित
- वीर रस का लोकनाट्य
- वाद्ययंत्र → ढफली
- प्रत्येक कलाकार चार पंक्ति पढ़ता है
  ↑ पठानी काव्य की
- टोंक नवाब फैज्जुला खां के समय प्रारम्भ
- जनक - अब्दुला करीम खाँ निहंग
  खलीफा करीम खाँ
- प. कलाकार → (1) रियाजुद्दीन (कव्वालों का बादशाह)

- यह अफगानीस्थान का एक लोकनाट्य था जो युद्धों के समय प्रारम्भ हुआ।
- मध्यकाल में युद्धों के समय सेना के उत्साह हेतु आयोजित मुख्य नाट्य।
- महिला व पुरुष दोनों भाग लेते हैं।

(3) लीलाऐं ⇒

(a) रामलीला ⇒
- रामायण को मंच पर प्रदर्शित करना।
- तुलसीदास गोस्वामी ने लोकप्रिय बनाया।

(i) मुकअभिनय रामलीला - बिसाऊ, झुंझुनु
(ii) ढाई कड़ी के दोहों की रामलीला - मांगरोल, बांरा

अन्य केन्द्र - (1) पाटुदा, कोटा
(2) जुरहरा, डीग

(b) रासलीला ⇒ फुलेरा जयपुर
- वल्लभाचार्य ने इस कला की शुरुआत की।
- हित हरिवंश ने इस कला को लोकप्रिय बनाया।
- भगवान कृष्ण की जीवनी मंच पर प्रदर्शित करना।

(c) रासधारी ⇒ मेवाड़ क्षेत्र
- जनक - मोती लाल जाट
- अर्थ - भगवान कृष्ण की जीवनी को चौक-चौराहे पर प्रदर्शित करना।

(d) रासमण्डल ⇒ वागड़ क्षेत्र
- संत मावजी ने इसे लोकप्रीय बनाया।
- भगवान कृष्ण की जीवनी को बाल रूप में मंच पर प्रदर्शित करना।

(e) गोरलीला ⇒ सिरोही
- गरासीया जनजाति में लोकप्रीय
- शिव पार्वती की लीला

(f) धनुषलीला ⇒ अटरु, बांरा
- यहां शिव का धनुष स्थानीय जनता द्वारा तोड़ने की लीला।

(g) सनकादियों की लीला ⇒
- घोसुण्डा व बस्सी (चित्तौड़)
- हिन्दु देवि-देवताओं की जीवनीया प्रदर्शित करना।

(5) रम्मत लोकनाट्य ⇒

- सामाजिक बुराईया व स्वरचित कहानियों को खेल के माध्यम से मंच पर प्रदर्शित करना।

- रम्मत का उद्‌गम - जैसलमेर
  रम्मत का स्थल - कड़ा / अखाड़ा
  रम्मत मे शामिल खीलाड़ी - खेलार / रम्मतिया
  वर्तमान में प्रमुख केन्द्र - JSL - BKN - फलौदी

(a) जैसलमेर क्षेत्र ⇒

- इस क्षेत्र की अधिकांश रम्मतें बसन्त पंचमी से आखातीज तक आयोजित होती हैं।
- जनक → तेज कवि
  - स्वतंत्र बावनी रम्मत लीखकर 1943 में गांधी को भेंट की।
  - रम्मत के प्रशिक्षण हेतु जैसलमेर में कृष्णा कंपनी अखाड़ा प्रारम्भ कीया।
- अन्य कलाकार ⇒ (1) गिरधारी सेवक
  (2) परमानंद
  (3) जीतमल
- मुमल, छबीली तम्बोलन रम्मत जैसलमेर में प्रसिद्ध।

(b) बीकानेर क्षेत्र ⇒

- आयोजन → होली - शीतलाष्टमी तक

Imp. - रम्मत में पाटा संस्कृति का विकास बीकानेर से हुआ।

- पुष्करणा ब्राह्मण रम्मत में सर्वाधिक संख्या में भाग लेते हैं।

- बीकानेर क्षेत्र में आयोजित प्रथम रम्मत - फाकड़ा दाता री रम्मत

- अन्य रम्मत -

(1) हेड़ाऊ री रम्मत -
- आदर्श पति - पत्नि के जीवन पर आधारित।
- जनक - जवाहर जी पुरोहित

(2) अम्मर सिंह रम्मत -
- राष्ट्रभक्ति के भावों का विकास

(3) जमनादास री रम्मत -
- यह बीकाणी व्यासों के चौक में आयोजीत रम्मत जो खेल कुद की भावना का विकास करती है।

- प्रसिद्ध कलाकार → (1) फागुजी महाराज
(2) सुआ जी महाराज
(3) मनीराम व्यास

(c) फलौदी क्षेत्र ⇒

- इस क्षेत्र की मुख्य रम्मत - रावलों की रम्मत
  ↓
  रावल जाति द्वारा आयोजित
  वाद्ययंत्र - मांदल
  सर्वाधिक हास्यपद रम्मत

(d) डाकी रम्मत ⇒ उदयपुर

Q. रम्मत लोक नाट्य के सम्बन्ध में असत्य कथन छाँटिए -

(a) इस नाट्य की शुरुआत गणपति वंदना के साथ होती है।

(b) महिला व पुरुष दोनों कलाकार भाग लेते हैं।

(c) रम्मत में शामिल खिलाड़ी नाटक शुरु करने से पहलें दर्शकों को अपने मेकअप व वेशभूषा के बारे में जानकारी देते हैं।

(d) रम्मत लोकनाट्य रूढ़ी वादिता से प्रभावित नहीं है।

☆ रम्मत नाट्य में केवल पुरुष कलाकार भाग लेते हैं।

(5) ख्याल ⇒

- धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक कहानियों को खेल के माध्यम से मंच पर प्रदर्शित करना।

- इस नाट्य की शुरुआत 18वीं सदि में मध्य राजस्थान से मानी जाती है।

ख्याल का स्थल - अखाड़ा

ख्याल के खिलाड़ी - दल

मुख्य सुत्रधर - हलकारा

★ मुख्य ख्याल ⇒

(1) कुचामनी ख्याल ⇒ कुचामन (डीडवाना)

- जनक - लच्छीराम जी - बुडसु निवासी
- प. कलाकार - उगमराज व बंशीलाल चुई
- मुख्य कहानिया - (1) गोगा चौहान
  (2) मीरा मंगल
  (3) राव रीडमल
  (4) चांद - नीलगिरी
- विशेषताएँ ⇒
  (1) केवल पुरुष भाग लेते हैं।
  (2) राजा-रानी व जोकर नामक तीन पात्र भाग लेते हैं। (महत्त्वपुर्ण पात्र - रानी)

(3) इस ख्याल का स्वरूप ओपेरा जैसा है।

(4) ढोल, ढोलक, शहनाई व सारंगी वादक मुख्य सहयोगी होती हैं।

(5) कुचामनी ख्याल सर्वाधिक लोक प्रीय ख्याल है जो खुले मंच पर आयोजित होती है।

(6) यह ख्याल सरल भाषा में है एवं लोकगीतों की प्रधानता है।

(2) तुर्रा - कलंगी ख्याल ⇒

उद्गम → चंदेरी (MP)

वर्तमान में प्र. → घोसुण्डा - निम्बाहेड़ा (चित्तौड़)
नीमच (MP)

जनक → तुकन गीर व शाह अली

मुख्य कहानी - शिव - पार्वती कथा

विशेषताएं ⇒

(1) यह एक गैर व्यवसायिक नाट्य है अर्थात खुले मंच पर आयोजित

(2) इसमें दर्शक भी भाग लेते हैं।

(3) मैच की सजावट होती है।

(4) हिन्दु व मुसलिम दोनों धर्मों के कलाकार शामिल अर्थात् ~~साम्प्रदायिक~~ साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतिक ख्याल।

(5) तुर्रा – शिव का अभिनय करने वाला – हिन्दु कलाकार
└ भगवा रंग के वस्त्र

मुख्य कलाकार – चेतराम
जयदयाल
ओंकार सिंह

(6) कलंगी अर्थात् पार्वती का अभिनय करने वाला मुस्लिम कलाकार हरें रंग के वस्त्र पहनता है।

प. कलाकार – हमीद बेग

(7) केवल पुरुष कलाकार भाग लेते हैं।

(3) चिड़ावा / शेखावाटी ख्याल ⇒ चिड़ावा, झुन्झुनु

- जनक – नानुराम जी
- प. कलाकार – दुलिया राणा व सोहन लाल

मुख्य कहानियाँ ⇒ (1) हीर - रांझा
(2) जयदेव कलाली
(3) राजा भृर्तहरि
(4) ढोला - मरवण

विशेषताएं →
→ प्रभावी पदसंचालन एवं सम्प्रेषण

(4) जयपुरी ख्याल ⇒ जयपुर

- जनक - मनरंग / भुपत खाँ
- प्र. कलाकार - बंशीधर भट्ट
  गोपीजी भट्ट
  गौटरा जान
- मुख्य कहानियां - (1) रसीली तम्बोलन
  (2) मियां - बीबु
  (3) पठान
  (4) कान - गुजरी
- विशेषताएं →

(1) इस ख्याल में समाचार, पत्र - पत्रिका, कविता, संगीत व गायन का समावेश दिखाई देता है।

(2) एकमात्र ख्याल जो दिन में प्रदर्शित होती है।

(3) महिला कलाकार भाग लेती हैं।

(4) बंद मंच पर आयोजित ख्याल।

(5) रूढ़िवादिता पर आधारित नहीं है अर्थात् इस ख्याल में परिवर्तन की अत्याधिक संभावनाएँ हैं।

(5) बीकानेरी ख्याल ⇒ बीकानेर

└ जनक - मोती लाल

(6) किशनगढ़ी ख्याल ⇒ किशनगढ़

└ जनक - बंशीधर शर्मा

(7) मांच ख्याल ⇒ जोधपुर व भीलवाड़ा

└ जनक - बगसुराम

(8) हेला ख्याल ⇒ लालसोट

├ जनक - हेला शायर

├ वाद्ययंत्र - नौबत, नगाड़ा

└ लम्बी टेर के साथ प्रस्तुत ख्याल

(9) कन्हैया ख्याल ⇒ करौली

├ मुख्य पात्र - मेड़िया

└ कथा को "कहन" कहते हैं।

(10) ढप्पाली ख्याल ⇒ लक्ष्मणगढ़, अलवर

[6] तमाशा => जयपुर

मूलत:- महाराष्ट्र की कला।

R RJ में जनक - बंशीधर भट्ट

- जयपुर शासक सवाई प्रताप सिंह के काल में शुरुआत।

- जयपुर में तमाशा का विकास गुणीजनखाना में हुआ।

- तमाशा = जयपुरी ख्याल + ध्रुपदगायिकी

मु. कलाकार - बंशीधर भट्ट
गोपी जी भट्ट
बृजपाल भट्ट
फुल जी भट्ट (तमाशा कला में उस्ताद परम्परा के जनक)
गौहरा जान

मु. विशेषताएँ -

(1) महिलाएं भाग लेती हैं।

(2) दिन में प्रदर्शित।

(3) संगीत, गायन व नृत्य तीनों का समावेश।

(4) तमाशा विशेष अवसरों पर आयोजित होते हैं -

जैसे- शीतलाष्टमी - छुट्टन मियां
होली - जोगी - जोगन
धुलण्डी - हीर - रांझा
चैत्र अमावस्या - गोपीचंद तमाशा

LaurelIdea.in

Q. RJ में प्रथम तमाशा किस शासक के काल में आयोजित हुआ ?

(a) मान सिंह – I (b) सवाई जय सिंह

(c) सवाई प्रताप सिंह (d) सवाई राम सिंह

व्याख्या → 1595, आमेर

तमाशा – धमक मजरी तमाशा

लेखक – मोहन कवि

Q. जयपुर के किस कच्छवाह शासक ने तमाशा कलाकारों को आश्रय प्रदान किया ?

→ सवाई राम सिंह – II

[7] दंगल ⇒

- यह लोक नाट्य पूर्वी राज० में लोकप्रिय है।
- दो दलों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित प्रतियोगिता।
- एक दल में अधिकतम 100 खिलाड़ी।

दंगल स्थल – अखाड़ा

- RJ में आयोजित मुख्य दंगल –

(1) रसिया दंगल ⇒ डीग

(2) लवारा दंगल ⇒ बयाना

(3) कन्हैया दंगल ⇒ करौली

(4) भेंट दंगल ⇒ बाड़ी, धौलपुर

(5) ढप्पाली दंगल – लक्ष्मणगढ़ , अलवर

(6) कादरा -भुतरा दंगल – गीजगढ़ , दौसा

[8] नौटंकी ⇒

- मूलतः हाथरस (UP) की कला है जिसके जनक - नत्थाराम शर्मा है।

RJ में शुरुआत – डीग

RJ में जनक – भूरी लाल

मुख्य नौटंकी – सत्यवान सावित्री
आल्हा ऊदल
भक्त पूर्णमल

- महिला व पुरुष दोनों कलाकार भाग लेते हैं।

प. कलाकार – (1) प. रामदयाल शर्मा , डीग
(2) गिर्राज प्रसाद किशोर , कामा
(3) कृष्णा कुमारी

- यह एक प्रकार का ख्याल नाट्य है जो निम्नलिखित 9 वाद्य के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

" C C D D S S N H M "

C – चंग
C – निकारा
D – ढोलक
D – ढफली
S – शहनाई
S – सारंगी
N – नगाड़ा
H – हारमोनियम
M – माट /पाबुजी के मटके

[9] स्वांग ⇒

- वह लोकनाट्य जिसमें रंगबिरंगी अलग-2 प्रकार की वेशभूषा पहनकर लोगो का मनोरंजन करवाया जाता है।

- मुख्य स्वांग ⇒

(1) बहरूपिया ⇒ भीलवाड़ा

- रंगबिरंगी वेशभुषा पहनकर घर-2 घुमकर प्रदर्शित की जाने वाली कला।
- भाण्ड जाति इस कला में निपुर्ण है। यह जाति देवगढ़ (Raj) में सर्वाधिक संख्या में निवास करती है।
- इस कला के कलाकार - हस्तनाम कहते हैं।
- आयोजन - फाल्गुन मास
- प्र० कलाकार ⇒

(1) जानकीलाल भाण्ड, भीलवाड़ा
- RJ का मंकीमैन
- इस कला को लोकप्रीय बनाने का श्रेय

(2) धनरूप भाण्ड
↳ महाराजा मानसिंह (जोधपुर) द्वारा इन्हें खेरखेजड़ा जगीर भेंट की गई

(3) अनिल भाण्ड

(4) परशुराम जी, केलवा (Raj)

(2) न्हाण महोत्सव ⇒ सांगोद, कोटा

- 7 लड़कों को विभिन्न देवियों की वेशभूषा पहनाकर रथ पर यात्रा निकालना न्हाण कहलाता है।
- सांगा गुर्जर की स्मृती में 'रस नाटक' की शुरुआत 18 वीं सदी में हुई।

(3) चौक च्याणनी ⇒ शेखावाटी (सिकर)

- गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणेश जी के वस्त्र धारण कर किया जाने वाला स्वांग।

(4) नाहरों का स्वांग ⇒ माण्डल, भीलवाड़ा

(5) टुटिया / खोड़िया ⇒

- बारात निकासी के पश्चात् वर पक्ष की महिलाओं द्वारा रचा जाने वाला स्वांग।

(6) बैठकी ⇒ धौलपुर - करौली

- जैन धर्म से सम्बन्धित एक स्वांग।

Launchidea.in